बरेली, रविवार
30 अक्टूबर, 2022
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 18+4=22

दैनिक जागरण

PAGE NO. 4 : MIDDLE

चार दिवसीय छठ के दौरान घरों में नहीं होता तामसिक भोज

डा. अलोक कुमार

छठ महापर्व कार्तिक शुक्ल पक्ष की षष्ठी को मनाया जाता है। इसकी तैयारी कार्तिक मास के प्रारंभ से ही होने लगती हैं। लोग दीपावली से पूर्व ही घर की साफ-सफाई करने लगते हैं, जिन घरों में छठ पर्व मनाया जाता है। वहां लहसुन-प्याज तक का सेवन भी बंद हो जाता है। छठ की आलौकिक छटा अब बिहार या पश्चिमी उप्र ही नहीं बल्कि विश्वपटल पर भी दिखती है।

पार्वती का छठा रूप भगवान सूर्य की बहन छठी मैया को त्योहार की देवी के रूप में पूजा जाता है। यह चंद्र के छठे दिन काली पूजा के छह दिन बाद मनाया जाता है। मिथिला में छठ के दौरान मैथिल महिलाएं, मिथिला की शुद्ध पारंपरिक संस्कृति को दर्शाने के लिए बिना सिलाई के शुद्ध सूती धोती पहनती हैं। त्योहार के अनुष्ठान कठोर हैं और चार दिनों की अवधि में मनाए जाते हैं। इनमें पवित्र स्नान, उपवास और पीने के पानी (वृत्ता) से दूर रहना, लंबे समय तक पानी में खड़ा होना और प्रसाद व सूर्य को अर्घ्य देना शामिल है। बड़ी संख्या में पुरुष भी इस उत्सव का पालन करते हैं क्योंकि छठ लिंग-विशिष्ट पर्व नहीं है। ऐतिहासिक रूप से मुंगेर (बिहार) सीता मनपत्थर (सीता चरण) सीताचरण मंदिर के लिए जाना जाता है, जो मुंगेर में गंगा के बीच में एक शिलाखंड पर स्थित है। ऐसा माना जाता है कि माता सीता ने मुंगेर में छठ पर्व मनाया था। इसके बाद ही छठ महापर्व की शुरुआत हुई। इसलिए मुंगेर और बेगूसराय में महापर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। एक कथा के अनुसार प्रथम देवासुर संग्राम में जब असुरों के हाथों देवता हार गये थे, तब देव माता अदिति ने तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति के लिए देवारण्य के देव सूर्य मंदिर में छठी मैया यानी अपनी पुत्री की आराधना की थी। तब प्रसन्न होकर छठी मैया ने उन्हें सर्वगुण संपन्न तेजस्वी पुत्र होने का वरदान दिया था। इसके बाद अदिति के पुत्र हुए त्रिदेव रूप आदित्य भगवान, जिन्होंने असुरों पर देवताओं को विजय दिलायी।

श्रीराममूर्ति मेडिकल कालेज, भोजीपुरा (बरेली)